International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 153-155

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

[1] योगेश्वर प्रसाद शर्मा, [2] डॉ0 सतीश कुमार सिंह

[1] शोध छात्र, शिक्षा विभाग, आई० एफ० टी० एम० विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

[2] शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, आई० एफ० टी० एम० विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

आधुनिक मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में संतुष्टि–असंतुष्टि को मानव व्यवहार की एक महत्वपूर्ण विमा स्वीकार किया जाता है। प्रोफेनबरगर (1961) ने ठीक ही कहा है कि "संतोष की एक झलक सम्पूर्ण दिन के कार्य को आल्हादित कर देती है तथा घटनाओ को निर्विघ्न रूप से संपन्न करती है, जबकि असंतोष की एक बदली कार्यकर्त्ता को नैराश्य की धुंध में घेर व लपेट लेती है। यही बात विद्यार्थी जीवन में भी अक्षरशः लागू होती है। विद्यार्थियो में अगर संतोष होगा, तो वे सुरुचिपूर्ण ढंग से, परिश्रम से, लगन से तथा तल्लीनता से अध्ययन कार्य को पूर्ण कर सकेंगे। शोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुए शीर्षक "माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" के अंतर्गत शोध कार्य किया। इस शोध कार्य को मुरादाबाद शहर के माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के दो सरकारी एवं दो निजी विद्यालयों के 28–28 छात्रों पर किया गया तथा शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि से सार्थक रूप से अधिक है।

मूल शब्द: मुरादाबाद शहर, माध्यमिक स्तर के छात्र, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय और शैक्षिक सन्तुष्टि आदि।

1. प्रस्तावना

मानव ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। वही मानव आज यत्र, तत्र, सर्वत्र अत्यंत संत्रस्त एवं असंतुष्ट दिखाई पड़ रहा है। उसका व्यक्तित्व तथा पहचान विघटित या परिलक्षित हो रही है। वह अपने लक्ष्य के प्रति उदासीन तथा आत्म निर्णय लेने में असमर्थ सा प्रतीत होता है। शिक्षा जगत भी इसका अपवाद नहीं है। अधिकांश शिक्षक, शिक्षार्थी, प्रशासन एवं शिक्षा से संबंधित अन्य कार्यकर्त्ता येन केन प्रकारेण असंतुष्ट दिखाई पड़ते हैं। आज का विद्यार्थी ही आने वाले कल के भारत का कर्णधार है। वह देश के भविष्य की आशा है। छात्र शैक्षिक संतुष्टि से तात्पर्य छात्रों द्वारा विद्यालय में गठित क्रियाकलापों से प्राप्त अनुभव के प्रति उनके कुल दृष्टिकोणों से है। छात्र कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालयों में आते हैं। वहीं छात्रों की रुचि, योग्यता एवं आवश्यकता का यथासंभव ध्यान रखते हुए निश्चित समय, निश्चित पाठ्यचर्या और निश्चित शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। शोध अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है, कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों में ऐसे कौन से कारक हैं जो छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि–असंतुष्टि को प्रभावित करते हैं। तथा किस प्रकार उनकी शैक्षिक संतुष्टि को बढ़ाया जाए जिससे छात्रगण शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करके राष्ट्र के विकास में अपना अधिकतम योगदान दे सकें।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण

2. माध्यमिक स्तर

माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 9 से 12 तक शिक्षा ग्रहण करने वाले बालकों से है। कक्षा 9 एवं कक्षा 10 उच्च माध्यमिक तथा कक्षा 11 व 12 उच्चतर माध्यमिक स्तर कहा जाता है। अतः कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा देने वाले विद्यालयों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) के अनुसार –"वह शिक्षा जो कि प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के बाद व महाविद्यालय शुरू होने से पहले समाप्त होती है उसे माध्यमिक शिक्षा कहते है।" इस प्रकार की शिक्षा 11–17 वर्ष के बच्चों को प्रदान की जाती है।

3. शैक्षिक सन्तुष्टि

छात्रों का विद्यालय के वातावरण, भौतिक सुख–सुविधाओं, शैक्षिक कार्यक्रमों और शिक्षण गतिविधियों के प्रति सन्तोष ही शैक्षिक सन्तुष्टि है। जब विद्यार्थी किसी संस्थान में शिक्षा प्राप्त करने आते हैं, तो वह शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों व परिस्थितियों के प्रति एक निश्चित भावना बना लेते हैं। यही भावना उनकी शैक्षिक सन्तुष्टि–असन्तुष्टि को निर्धारित करती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि–असन्तुष्टि को विद्यार्थियों के शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रति अभिवृत्ति अथवा दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

जॉन डीवी (1922) के अनुसार –"किसी विशेष माँग की पूर्ति ही सन्तुष्टि है।"

मॉसलो (1954) के अनुसार मनुष्य की कुछ आवश्यकताएं होती हैं जिनकी पूर्ति होने पर मनुष्य संतुष्ट होता है तथा अपूर्ति होने पर असंतुष्ट होता है। इस प्रकार दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि विद्यालय से संबंधित समस्त क्रिया कलापों के प्रति छात्रों का कुल दृष्टिकोण ही छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि है।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत अध्ययन में चर के रूप में केवल शैक्षिक संतुष्टि को ही लिया गया है।

शोध के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध सीमांकन

1. शोध कार्य मुरादाबाद शहर के माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित चार माध्यमिक विद्यालयों (दो सरकारी एवं दो निजी विद्यालयों) तक ही सीमीत किया गया है।
2. शोध अध्ययन में केवल कक्षा 10 के छात्रों को ही लिया गया है।

शोध न्यादर्श

यादृच्छिक पद्धति द्वारा शोधकर्ता ने मुरादाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालयों को शोध की जनसंख्या मानते हुए, सभी विद्यालयों की एक सूची बनाकर, उसमें से 04 विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से कर लिया। अब चयनित विद्यालयों से इसी विधि द्वारा 28(14*2) सरकारी एवं 28(14*2) निजी विद्यालयों के छात्रों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु डॉ० अलका गुप्ता द्वारा निर्मित "छात्र शैक्षिक सन्तोष मापनी" का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध कार्य में विश्वसनीय परिणाम निश्चित करने हेतु उच्च एवं विश्वसनीय सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण

तालिका 1: माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन :

क्रम सं0	विद्यालय	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	t-अनुपात	सार्थकता स्तर
01	माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि	28	223.46	22.79	3.14	.05 स्तर पर सार्थक
02	माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि	28	206.07	18.35		

($df=N_1+N_2-2=28+28-2=54$)

उपर्युक्त परिणामों के अनुसार t-अनुपात का मान गणना द्वारा 3.14 प्राप्त हुआ है। t–तालिका के अनुसार df=54 पर t का आवश्यक मान =1.67 है। यहाँ चूँकि t के आवश्यक मान से t का गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक है, इसलिये .05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" निरस्त करते हुए कह सकते है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रो का मध्यमान निजी विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान से अधिक है और दोनो मध्यमानो में सार्थक अन्तर है।

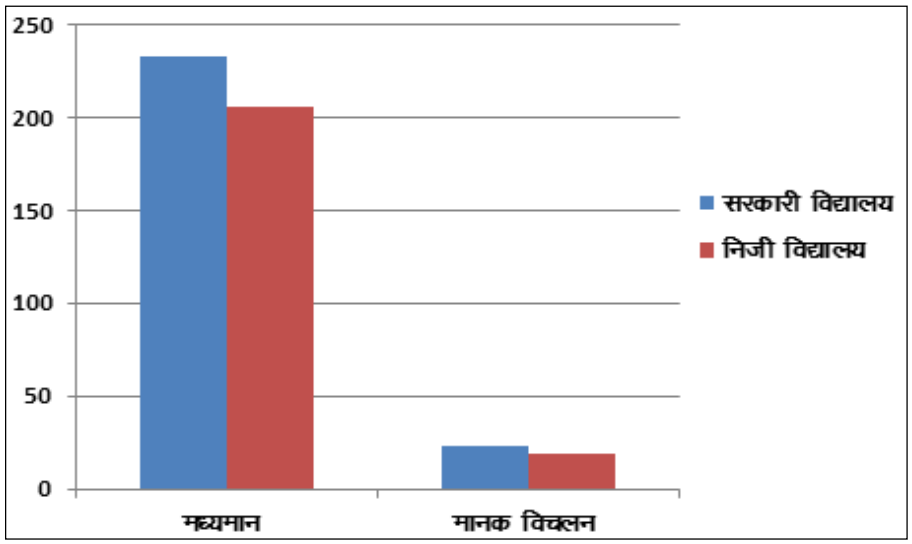

आकृति 1: माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि का ग्राफीय अध्ययन

आकृति से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय के छात्रों (N=28) की शैक्षिक सन्तुष्टि के परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 223.46 एवं मानक विचलन 22.79 प्राप्त हुआ तथा निजी विद्यालय के छात्रों (N=28) की शैक्षिक सन्तुष्टि के परीक्षण का मध्यमान 206.07 एवं मानक विचलन 18.35 प्राप्त हुआ।

शोध निष्कर्ष

अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि, निजी विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा सार्थक रुप से अधिक है। सरकारी माध्यमिक विद्यालयों मे छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि का निजी विद्यालयों के छात्रों से सार्थक रुप से अधिक होने के कारणो मे सम्भवतः योग्य प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य, विद्यार्थियों पर आर्थिक बोझ न होना तथा विद्यालय मे शैक्षिक वातावरण का होना महत्वपूर्ण कारण प्रतीत होते हैं।

सुझाव

अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शैक्षिक संतुष्टि के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गए हैः–

- यह परिणाम निजी विद्यालय के संचालको को अपने विद्यालय की गुणवत्ता सुधारने हेतु संकेत प्रदान करता है।
- अध्ययन का निष्कर्ष सरकारी माध्यमिक विद्यालयों एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के हित धारको को प्रेरित करता है कि वे इन विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक सन्तुष्टि हेतु योग्य शिक्षक, उचित शैक्षिक प्रशासन तथा मानकानुसार भौतिक सुविधाएं इत्यादि प्रदान करें तो इससे विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि निश्चित रूप से बढ़ेगी।
- पाठ्यचर्या, विषय आवंटन, समय सारणी, अध्यापकगण, शिक्षण युक्तियाँ, साथी समूह, प्रशासन, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय और वाचनालय आदि अनेक ऐसे पक्ष व क्रियाकलाप हैं जो छात्रों के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते है तथा जिनके फलस्वरूप छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि–असंतुष्टि परिवर्तित हो सकती है। अतः इन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. प्रोफेनबरगर, ए० टी०, प्रिंसिपल्स ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, बोम्बे अलाइड पैसिफिक लिमिटेड, इंडियन एडिसन, 1961.
2. डीवी, जे० : ह्यूमैन नेचर एन्ड कंडक्ट–एन इंट्रोडक्शन टू सोसिअल साइकोलोजी। न्यूयॉर्क : दी मैकमिलन कं०.,1922.
3. मॉसलो, ए० एच० : मोटिवेशन एन्ड पर्सनॉल्टी, न्यूयॉर्क : हापर एन्ड रॉ पब्लिशर्स, 1954.
4. वार्नर आर० बी०., स्टूडेंट्स सैटिस्फेक्सन/डिससैटिस्फेक्सन एन्ड देअर रिलेशनशिप टू टीचर एन्ड एडमिनिस्ट्रेशन. परसेप्सन ऑफ दीज डिजर्टेशन एब्स्ट्रैक्ट इंटरनेशनल (ए), 1975 : 36 : 5–6, पी. 2564.
5. शर्मा, मीनाक्षी, एडोल्सेन्टस' सैटिस्फेक्सन विध एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन. न्यू देहली : एम० एन० पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,1985.
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986.
7. मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा आयोग), 1952.53.
8. www.researchineducation.in
9. web.http//wikipedia.org/students satisfaction
10. www.shodhganga.inflibnet.ac.in